Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

धर्म नैतिकता और गांधी दर्शन

डॉ. नितीश ओबेराइन*

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) श्री राजीव गांधी शासकीय महाविद्यालय, बण्डा, जिला-सागर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – गांधीजी के सिद्धांतों, विचारों और मंतव्यो का समूहीकरण गांधी दर्शन कहलाता है। सरल शब्दों में गांधी के वे सिद्धांत जिन्हे हम प्रतिदिन अपने जीवन में महसूस करते है जैसे सत्य, धर्म, शांति, अहिंसा, प्रेम, संयम, विश्वास, भलाई, कृपा नम्रता, सत्याग्रह, सविनय, ब्रह्चर्य, अस्तेय, धीरज, मेल एवं रोटी के लिए श्रम।

गांधी के ये विचार मानव के जीवन को नई दिशा देने में सक्षम है। मानव जाति इन सरल शब्दों में छिपे हुए गूढ़ अर्थ को समझती है अथवा हनी? गांधीजी ने विश्व के विभिन्न प्रमुख धर्मों का सूक्ष्म अध्ययन किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सूर्व साधारण में धर्म की जो अवधारणा प्रचलित है वह नितांत भ्रामक है इसलिए उन्होने अपने प्रयोगों और निष्कर्षो के आधार पर धर्म की पुन: व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होने धर्म को जीवन का आधारभूत तत्व बताया। उन्होंने कहा–'धर्म से मेरा अभिप्राय औपचारिक या रूढ़िगत धर्म से नही परन्तु उस धर्म से है जो सब धर्मों की बुनियाद है और जो हमें अपने सृजनहार का साक्षात्कार कराता है.....।'

'मनुष्य धर्म मूलत: मानवतावादी है। उसका लक्ष्य मानव सेवा है। गांधी जी का धर्म सह-अस्तिव का धर्म है, सहिष्णुता का धर्म है।'

भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ पर विभिन्न धर्मो के लोग निवास करते है। भारत का संविधान प्रत्येक भारतीय नागरिक उसकी इच्छानुसार धर्म को मानने या ना मानने का अधिकार प्रदान करता है। गांधीजी को राष्ट्रपिता का दर्जा प्राप्त है लेकिन उनके सिद्धांतों को इसी राष्ट्र ने अपनी तरह से परिभाषित कर लिया है उन्होंने चाहा कि धर्म में राजनीति इसलिए होने चाहिए कि वह साफ, शुद्ध और पवित्र रहे और हमारे राजनैतिक दलों ने धर्म के आधार पर मतों का ध्रुवीकरण कर दिया है अर्थात् गांधी के इस सिद्धांत की परिभाषा ही परिवर्तित हो गयी कि राजनीति धर्म सम्मत होनी चाहिए।

गांधीजी के अनुसार, राजनीति मानव के जीवन का प्रमुख भाग है। हालाँकि उनका मानना है कि राज्य की शक्ति में वृद्धि होने से व्यक्ति की शक्ति कम हो जाती है, लेकिन वे राजनीति को एक ऐसे साधन रूप में देखते हैं, जो लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करती है। उन्होने स्पष्ट किया, 'सामाजिक सुधार का मेरा कार्य किसी भी तरह से राजनीति से कम नहीं है।'

वास्वविकता में जब मैंने देखा की मेरा सामाजिक कार्य कुछ सीमा तक राजनीतिक कार्य के बिना होना सम्भव नही है तो मैंने राजनीति को अपनाया और यह केवल उस सीमा तक सामाजिक कार्य में सहायक होता है। राजनीति मनुष्य के सभी कार्यों को प्रभावित करती है। अत: राजनीतिक कार्य जीवन तथा व्यवसाय के विभिन्न अंगों से अन्यन्त निकट होते हैं। गांधीजी राजनीति में जिन बातों से घृणा करते थे, वह थीं सत्ता का संकेन्द्रण और राजनीतिक सत्ता के लिए हिंसा का प्रयोग।

गांधीजी का कहना था कि धर्म को राजनीति से पृथक नही किया जा सकता है। उनका कहना था कि आत्मानुभूति के रूप में जीवन का निश्चित आधारभूत उद्देश्य राजनीति, अदि धार्मिक कार्यों को करने में समर्थ नही बनाता है, तो वह सार्थक नही है। उनका मानना था, 'मरे लिए धर्म की राजनीति टोपी पूर्णत: गन्दगी है, इसे दूर फेंक देना चाहिए।'

उनका मानना था कि राजनीति को ऐसे माध्यम के रूप में लिया जाए, जिसके माध्यम से मनुष्य नीतिपरक और नैतिक नियमों के मूर्तरूप राजनीतिक में हिंसा और धर्म के बिना भी अपने आप पर नियन्त्रण कर सके। उन्होने राजनीति में उस रूप में भाग लेने पर बल दिया, जिसका स्वरूप धार्मिक हो।

उनका कहना था 'मेरे लिए धर्म के बिना राजनीति नही है, अन्धविश्वासों और बन्धनों का धर्म नही, वह धर्म नही, जो घृणा और संघर्ष पैदा करता है' वरन् गांधीजी के अनुसार, राजनीति से तात्पर्य जहाँ लोग अन्य लोगों की सेवा करने के प्रयोजन से सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते हैं। उनके लिए सभी राजनीतिक कार्यों का सम्बन्ध स्वत: ही प्रत्येक के कल्याण से था।

गांधीजी मूलत: धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और जिस प्रकार उन्होने अपने जीवन में धर्म का निर्वाह किया उस आधार पर उन्हें भारतीय परम्परा का एक महान सन्त कहा जा सकता है। एक धार्मिक नेता होते हुए भी गांधीजी धार्मिक रूढ़िवादिता और धर्मान्धता के समर्थक नही थे तथा धर्म के संबंध में उनका दृष्टिकोण लौकिक तथा मानवतावादी था। वे प्राणीमात्र की सेवा को ही वास्तविक आध्यात्मिक जीवन का मूल तत्व मानते थे और उनका कथन था कि 'मानव क्रियाओं से पृथक कोई धर्म नही।' इसी प्रकार वे राजनीति शब्द में 'नीति' अर्थात् धर्म और मानवता को प्राथमिकता देते थे, 'राज' अर्थात् सत्ता को नहीं। धर्म के संबंध में अपने इस लौकिक दृष्टिकोण के कारण ही गांधीजी ने राजनीति में प्रवेश इसलिए किया, क्योकि राजनीति धर्मविहीन होती जा रही थी और उसमें धर्म की पुर्नस्थापना करना वे अपना कर्तव्य समझते थे। उन्ही के शब्दों में 'यदि मै राजनीति में भाग लेता हूँ तो केवल इसलिए कि राजनीति हमें एक सांप की भांति चारों ओर से घेरे हुए है। मैं इस सांप से लड़ना चाहता हूँ। उनके अनुसार राष्ट्र को चाहिए कि वे सत्य, अहिंसा, प्रेम सेवा आदि का पूर्ण पालन करें साथ ही नैतिकता शुद्ध आचार-

विचार के द्वारा धर्म का परिपालन किया जाना आवश्यक है।'

इतिहास साक्षी है भारत की स्वतंत्रता के उपरांत हिन्दु-मुस्लिम दंगे, सिक्ख दंगे, राम जन्मभूमि, बावरी मस्जिद विवाद, गुजरात दंगे, सहारनपुर दंगे, मुजफ्फरनगर दंगे एवं वर्तमान में दादरी कांड, क्या हमारे धर्म निरपेक्ष होने पर सवालिया निशान नही लगाते? ऐसी सैकड़ो घटनाएँ इस राष्ट्र को कलंकित नही करती? क्या बुद्धिजीवी राष्ट्र ऐसी घटनाओं को होने से नही रोक सकता?

वास्तव में इन सभी प्रश्नों के जवाब गांधी के दर्शन में छिपे हुए हैं हमें आज भी आवश्यकता है गांधीजी के उन्ही सिद्धांतो को मानने की औरै उसी नजरिये से अपने आप को ढ़ालने की।

मैं बड़े दावे के साथ कह सकता हूँ कि जिस दिन भारत में सत्य, प्रेम, धर्म, नैतिकता और अन्य गांधी सिद्धांतो परे लोगों ने जीना प्रारंभ कर दिया निसंदेह हम उसी दिन विश्व गुरू बन जाएंगे और धर्म निरपेक्ष गांधी दर्शन सफल होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. सत्य के मेरे प्रयोग, आत्मकथा, मो.क. गांधी जवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 2014, पृष्ठ 61
2. वही, पृष्ठ 110
3. वही, पृष्ठ 122
4. गुप्ता, अंजना गांधी और हम, कमल प्रभा प्रकाशन, भोपाल 2003
5. फड़िया बी.एल. भारतीय शासन एवं राजनीति, साहित्य भवन प्रकाशन आगरा 2008

****